The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-1, April-2023
www.theresearchdialogue.com

संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 शोभा गिल
एसोसिएट प्रोफेसर
स्कूल ऑफ आर्ट्स एन्ड सोशल साइंस
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर (उ0प्र0)

स्वाति शर्मा
शोधार्थिनी
स्कूल ऑफ आर्ट्स एन्ड सोशल साइंस
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य संयुक्त एवं एकल परिवारों में रहने वाले किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन इस आधार पर किया गया कि परिवार बालक की प्रथम एवं सर्वाधिक प्रभावशाली सामाजिक संस्था है, जो उसके मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास की दिशा निर्धारित करती है। वर्तमान समय में संयुक्त परिवारों का स्वरूप तेजी से बदलकर एकल परिवारों में परिवर्तित हो रहा है, जिसके कारण किशोरों के पालन–पोषण, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक अनुभवों तथा मानसिक विकास की परिस्थितियों में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इसी संदर्भ में यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। अध्ययन में मुरादाबाद जनपद के 250 किशोरों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया, जिनमें 140 किशोर संयुक्त परिवारों तथा 110 किशोर एकल परिवारों से संबंधित थे। आँकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित मानसिक विकास मापनी का उपयोग किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात द्वारा किया गया। जिससे यह निष्कर्ष निकला कि संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों के मानसिक विकास में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि संयुक्त परिवार के किशोर मानसिक विकास की दृष्टि से एकल परिवार के किशोरों की अपेक्षा अधिक विकसित पाए गए। इसका प्रमुख कारण संयुक्त परिवारों में उपलब्ध सहयोगात्मक वातावरण, वरिष्ठ सदस्यों का मार्गदर्शन, अनुभवों का आदान–प्रदान, सामूहिक सहभागिता तथा सकारात्मक सामाजिक अंतःक्रियाएँ हैं, जो किशोरों की तार्किक क्षमता, निर्णय शक्ति, समस्या–समाधान कौशल, आत्मविश्वास तथा मानसिक संतुलन के विकास में सहायक सिद्ध होती हैं साथ ही अध्ययन ने यह भी स्पष्ट किया कि केवल परिवार का प्रकार ही मानसिक विकास का एकमात्र निर्धारक नहीं है बल्कि परिवार का

भावनात्मक वातावरण, अभिभावकों की सहभागिता, संवाद की गुणवत्ता, अनुशासन, स्नेह तथा पालन–पोषण की शैली भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों, परामर्शदाताओं तथा शिक्षा–नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे वे किशोरों के मानसिक विकास के लिए अधिक अनुकूल पारिवारिक एवं शैक्षिक वातावरण का निर्माण कर सकें।

मुख्यशब्द – संयुक्त एवं एकल परिवार, किशोरावस्था, मानसिक विकास एवं संवेगात्मक विकास

प्रस्तावना

परिवार मानव जीवन की प्रथम एवं सर्वाधिक प्रभावशाली सामाजिक संस्था है। जन्म से लेकर जीवन के प्रत्येक चरण तक व्यक्ति के व्यक्तित्व, व्यवहार, मूल्यों, दृष्टिकोण तथा मानसिक विकास के निर्माण में परिवार की केंद्रीय भूमिका होती है। बालक का पहला विद्यालय परिवार ही होता है जहाँ वह भाषा, आचरण, अनुशासन, सामाजिक संबंध, भावनात्मक अभिव्यक्ति तथा जीवन के मूलभूत कौशल सीखता है। विशेष रूप से किशोरावस्था में, जब बालक शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं संवेगात्मक परिवर्तनों के तीव्र दौर से गुजर रहा होता है, उस समय परिवार का वातावरण उसके मानसिक विकास को सकारात्मक अथवा नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इस दृष्टि से परिवार की संरचना, उसके सदस्यों के बीच संबंध, पालन–पोषण की शैली, संवाद, सहयोग एवं उपलब्ध संसाधनों का किशोर के मानसिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वर्तमान समय में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण परिवार की संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। पारंपरिक संयुक्त परिवारों का स्थान धीरे–धीरे एकल परिवार लेते जा रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप किशोरों के विकास की परिस्थितियाँ भी परिवर्तित हो रही हैं इसलिए संयुक्त एवं एकल परिवारों में पलने वाले किशोरों के मानसिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक विषय बन गया है। मानसिक विकास से अभिप्राय बालक की बौद्धिक, संज्ञानात्मक, तार्किक, विश्लेषणात्मक, निर्णयात्मक तथा समस्या–समाधान संबंधी क्षमताओं के क्रमिक विकास से है। इसमें स्मृति, ध्यान, कल्पना, भाषा, चिंतन, सृजनात्मकता, तर्कशक्ति, निर्णय लेने की क्षमता, सीखने की गति, बौद्धिक अनुकूलन तथा परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने की योग्यता सम्मिलित होती है। मानसिक विकास केवल जैविक परिपक्वता का परिणाम नहीं है बल्कि यह परिवार, विद्यालय, सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक अनुभवों तथा व्यक्तिगत अंतःक्रियाओं से भी प्रभावित होता है। किशोरावस्था में मस्तिष्क का विकास तीव्र गति से होता है, जिसके कारण किशोरों में अमूर्त चिंतन, तार्किक विश्लेषण, भविष्य की योजना बनाने, आत्ममूल्यांकन करने तथा स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता विकसित होने लगती है। यदि इस अवस्था में परिवार से उचित मार्गदर्शन, प्रोत्साहन, संवाद एवं भावनात्मक सहयोग प्राप्त होता है, तो किशोर का मानसिक विकास संतुलित एवं स्वस्थ रूप में होता है। संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति की प्राचीन एवं महत्वपूर्ण पारिवारिक व्यवस्था रही है, जिसमें अनेक पीढ़ियाँ एक साथ निवास करती हैं तथा परिवार के सदस्य परस्पर सहयोग, उत्तरदायित्व एवं सामूहिक जीवन के सिद्धांतों का पालन करते हैं। संयुक्त परिवार में दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई, भाई–बहन एवं अन्य संबंधियों का सान्निध्य किशोरों को विविध अनुभव प्रदान करता है। इस प्रकार का

वातावरण सामाजिक अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षा तथा बहुआयामी संवाद के अवसर उपलब्ध कराता है। परिवार के वरिष्ठ सदस्य अपने जीवनानुभवों, नैतिक मूल्यों तथा व्यवहारिक ज्ञान के माध्यम से किशोरों के मानसिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। विभिन्न आयु वर्गों के साथ निरंतर संपर्क से किशोरों में तार्किक सोच, सामाजिक समझ, निर्णय क्षमता तथा समस्या–समाधान कौशल का विकास होता है साथ ही सामूहिक चर्चा, पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता तथा विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचय किशोरों की संज्ञानात्मक परिपक्वता को बढ़ावा देता है। इसके विपरीत, एकल परिवार आधुनिक जीवनशैली का प्रमुख स्वरूप बन चुका है, जिसमें सामान्यतः माता–पिता एवं उनके बच्चे ही परिवार के सदस्य होते हैं। औद्योगीकरण, नगरीकरण, रोजगार के अवसरों की तलाश, शिक्षा का प्रसार, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भावना तथा बदलती सामाजिक संरचना के कारण एकल परिवारों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। एकल परिवार में माता–पिता बच्चों को अधिक व्यक्तिगत ध्यान, समय एवं संसाधन उपलब्ध करा सकते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा बौद्धिक विकास को प्रोत्साहन मिल सकता है। ऐसे परिवारों में निर्णय लेने की स्वतंत्रता अपेक्षाकृत अधिक होती है तथा बच्चों को अपनी रुचियों एवं क्षमताओं के अनुसार विकसित होने के अवसर प्राप्त होते हैं। आधुनिक तकनीकी संसाधनों, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा व्यक्तिगत मार्गदर्शन के कारण अनेक एकल परिवारों में किशोरों का मानसिक विकास सकारात्मक दिशा में भी होता है। हालाँकि, एकल परिवारों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। वर्तमान समय में अधिकांश माता–पिता दोनों ही कार्यरत होते हैं, जिसके कारण बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने के अवसर सीमित हो जाते हैं। व्यस्त जीवनशैली, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण तथा सामाजिक संपर्कों की कमी के कारण किशोरों में अकेलापन, तनाव, निर्णय संबंधी भ्रम तथा मानसिक दबाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार के अन्य वरिष्ठ सदस्यों की अनुपस्थिति के कारण किशोरों को विविध अनुभवों, पारिवारिक परामर्श तथा बहु–पीढ़ीगत संवाद का लाभ कम मिल पाता है। इसके परिणामस्वरूप कुछ किशोर अत्यधिक डिजिटल माध्यमों पर निर्भर हो जाते हैं, जिससे उनकी सामाजिक एवं मानसिक परिपक्वता प्रभावित हो सकती है। इसलिए यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक एकल परिवार किशोरों के मानसिक विकास के लिए समान रूप से अनुकूल अथवा प्रतिकूल होय बल्कि यह परिवार के वातावरण, अभिभावकीय सहभागिता, संवाद शैली एवं उपलब्ध अवसरों पर निर्भर करता है। इसी प्रकार संयुक्त परिवार भी प्रत्येक स्थिति में आदर्श सिद्ध नहीं होते। यद्यपि संयुक्त परिवारों में सामाजिक सुरक्षा, सहयोग एवं अनुभवों की विविधता उपलब्ध होती है, फिर भी अनेक बार अधिक सदस्यों के कारण व्यक्तिगत ध्यान का अभाव, पीढ़ियों के मध्य विचारों का संघर्ष, अनुशासन संबंधी कठोरता, निर्णय लेने की सीमित स्वतंत्रता तथा पारिवारिक मतभेद किशोरों के मानसिक विकास को प्रभावित कर सकते हैं। कुछ परिवारों में पारंपरिक मान्यताओं के कारण किशोरों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मक सोच को पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं मिल पाता। इससे उनकी तार्किक क्षमता, आत्मनिर्णय एवं आत्मविश्वास के विकास पर प्रभाव पड़ सकता है। अतः यह स्पष्ट है कि केवल परिवार का प्रकार ही मानसिक विकास का निर्धारक नहीं है, बल्कि परिवार के भीतर का वातावरण, संबंधों की गुणवत्ता, संचार की प्रभावशीलता तथा पालन–पोषण की शैली अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किशोरावस्था लगभग 12 से 18 वर्ष की आयु के मध्य का संक्रमणकाल है, जिसमें बालक बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसर होता है। इस अवधि

में मानसिक विकास अत्यंत तीव्र गति से होता है। किशोरों में जिज्ञासा, तार्किक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता, आत्मचिंतन, कल्पनाशीलता तथा भविष्य की योजनाएँ बनाने की प्रवृत्ति विकसित होती है। वे सामाजिक मान्यताओं, नैतिक मूल्यों तथा जीवन के उद्देश्यों के प्रति अधिक सजग हो जाते हैं। इस अवस्था में परिवार से प्राप्त बौद्धिक वातावरण, प्रोत्साहन, संवाद तथा भावनात्मक सहयोग उनके मानसिक विकास की दिशा निर्धारित करते हैं। यदि परिवार में खुला संवाद, सकारात्मक वातावरण, अध्ययन के अनुकूल परिस्थितियाँ तथा स्वतंत्र विचारों का सम्मान उपलब्ध हो, तो किशोरों की बौद्धिक एवं मानसिक क्षमताओं का समुचित विकास होता है। इसके विपरीत, तनावपूर्ण पारिवारिक वातावरण, उपेक्षा, अत्यधिक नियंत्रण अथवा संवादहीनता मानसिक विकास में बाधा उत्पन्न कर सकती है। मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों ने भी परिवार को मानसिक विकास का प्रमुख निर्धारक माना है। जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत के अनुसार किशोरावस्था में औपचारिक संक्रियात्मक चिंतन का विकास होता है, जिसमें व्यक्ति अमूर्त अवधारणाओं, परिकल्पनाओं तथा तार्किक विश्लेषण के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम होता है। लेव वाइगोत्स्की ने सामाजिक अंतःक्रिया को संज्ञानात्मक विकास का आधार माना तथा स्पष्ट किया कि परिवार एवं सामाजिक परिवेश के साथ सक्रिय सहभागिता मानसिक विकास को गति प्रदान करती है। अल्बर्ट बंडूरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार किशोर परिवार के सदस्यों के व्यवहार का अवलोकन कर सीखते हैं। इसी प्रकार ब्रोनफेनब्रेनर के पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत में परिवार को बालक के विकास का सबसे निकट एवं प्रभावशाली पर्यावरण माना गया है। ये सभी सिद्धांत इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि परिवार की संरचना एवं पारिवारिक वातावरण किशोरों के मानसिक विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। वर्तमान भारतीय समाज में संयुक्त एवं एकल परिवारों के स्वरूप में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, डिजिटल जीवनशैली, आर्थिक प्रतिस्पर्धा तथा बदलते सामाजिक मूल्यों ने किशोरों के विकास की परिस्थितियों को भी प्रभावित किया है। आज के किशोर पहले की अपेक्षा अधिक सूचना–संपन्न हैं, किंतु साथ ही मानसिक तनाव, प्रतिस्पर्धा, डिजिटल निर्भरता तथा सामाजिक चुनौतियों का भी सामना कर रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में यह जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि संयुक्त एवं एकल परिवारों में पलने वाले किशोरों के मानसिक विकास में किस प्रकार की समानताएँ एवं भिन्नताएँ विद्यमान हैं तथा कौन–से पारिवारिक कारक उनके मानसिक विकास को अधिक प्रभावी रूप से प्रभावित करते हैं। इस प्रकार का अध्ययन न केवल शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में उपयोगी होगा, बल्कि अभिभावकों, शिक्षकों, परामर्शदाताओं तथा नीति–निर्माताओं के लिए भी महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

आवश्यकता एवं महत्व

किशोरावस्था मानव जीवन का एक अत्यंत संवेदनशील, परिवर्तनशील एवं निर्णायक विकासकाल है। सामान्यतः 12 से 18 वर्ष की आयु के मध्य आने वाली यह अवस्था बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच सेतु का कार्य करती है। इस अवधि में किशोरों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा बौद्धिक विकास में तीव्र परिवर्तन होते हैं। विशेष रूप से मानसिक विकास के संदर्भ में किशोरों की चिंतन–शक्ति, तर्क क्षमता,

निर्णय लेने की योग्यता, कल्पनाशीलता, समस्या–समाधान क्षमता, आत्मबोध, आत्मविश्वास तथा व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया तेजी से विकसित होती है। इन सभी प्रक्रियाओं पर परिवार का गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि परिवार ही बालक की प्रथम एवं सबसे प्रभावशाली सामाजिक संस्था है। परिवार का वातावरण, पारिवारिक संबंध, अभिभावकों की पालन–पोषण शैली, सदस्यों के बीच संवाद, अनुशासन, स्नेह, सहयोग तथा नैतिक मूल्यों का समावेश किशोर के मानसिक विकास को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। वर्तमान समय में समाज में संयुक्त परिवारों की संख्या निरंतर घट रही है तथा एकल परिवारों का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। इस सामाजिक परिवर्तन ने किशोरों के विकास से संबंधित अनेक नए प्रश्न उत्पन्न किए हैं। इसलिए संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन करना वर्तमान समय की एक महत्वपूर्ण शैक्षिक एवं सामाजिक आवश्यकता बन गया है। संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति की एक प्राचीन एवं सुदृढ़ व्यवस्था रही है, जिसमें अनेक पीढ़ियाँ एक साथ निवास करती हैं तथा पारस्परिक सहयोग, सामूहिक उत्तरदायित्व, अनुभवों का आदान–प्रदान और भावनात्मक सुरक्षा का वातावरण उपलब्ध होता है। संयुक्त परिवार में किशोरों को दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई तथा अन्य सदस्यों का मार्गदर्शन प्राप्त होता है, जिससे उनके मानसिक विकास को विविध अनुभवों का आधार मिलता है। परिवार के अनेक सदस्यों के साथ रहने से किशोरों में सामाजिक समायोजन, सहनशीलता, सहयोग, अनुशासन, धैर्य तथा सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है। दूसरी ओर, एकल परिवार में माता–पिता और बच्चों तक सीमित पारिवारिक संरचना होती है, जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता, गोपनीयता तथा संसाधनों का अधिक उपयोग संभव होता है, किंतु अनेक बार सामाजिक सहभागिता एवं भावनात्मक सहयोग का दायरा अपेक्षाकृत सीमित रह जाता है। कार्यरत माता–पिता की व्यस्तता, सीमित पारिवारिक संवाद तथा तकनीकी उपकरणों पर बढ़ती निर्भरता के कारण कई किशोर अकेलेपन, तनाव, चिंता अथवा व्यवहारगत समस्याओं का अनुभव कर सकते हैं। यद्यपि यह स्थिति प्रत्येक एकल परिवार पर समान रूप से लागू नहीं होती, फिर भी इन दोनों प्रकार की पारिवारिक व्यवस्थाओं का किशोरों के मानसिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि वर्तमान सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों ने परिवार की संरचना और कार्यप्रणाली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। नगरीकरण, औद्योगीकरण, रोजगार के अवसरों का विस्तार, शिक्षा का प्रसार तथा जीवनशैली में परिवर्तन के कारण संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ है और एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप किशोरों के पालन–पोषण की परिस्थितियों में भी परिवर्तन आया है। आज के किशोर प्रतिस्पर्धा, शैक्षिक दबाव, करियर संबंधी चिंताओं, सोशल मीडिया, डिजिटल तकनीक तथा बदलती सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित हैं। ऐसी परिस्थितियों में परिवार की भूमिका पहले की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि परिवार किशोर को उचित मार्गदर्शन, भावनात्मक सुरक्षा, सकारात्मक संवाद और अनुकूल वातावरण प्रदान करता है, तो उसका मानसिक विकास संतुलित एवं स्वस्थ होता है। इसके विपरीत, उपेक्षा, पारिवारिक तनाव, संवादहीनता अथवा अत्यधिक नियंत्रण जैसी परिस्थितियाँ मानसिक विकास को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती हैं। अतः यह अध्ययन यह स्पष्ट करने में सहायक होगा कि कौन–से पारिवारिक तत्व किशोरों के मानसिक विकास को

अधिक प्रभावी रूप से प्रोत्साहित करते हैं। इस विषय का महत्त्व शिक्षा के क्षेत्र में भी अत्यधिक है। विद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं है, बल्कि वह विद्यार्थियों के समग्र विकास का केंद्र भी है। यदि शिक्षकों को यह जानकारी हो कि विभिन्न पारिवारिक संरचनाओं से आने वाले किशोरों की मानसिक आवश्यकताएँ, व्यवहार, सीखने की शैली, आत्मविश्वास तथा समस्या–समाधान क्षमता में किस प्रकार के अंतर पाए जाते हैं, तो वे अधिक प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित कर सकते हैं। विद्यालय परामर्शदाता, मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों की पहचान कर सकेंगे जिन्हें अतिरिक्त शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक अथवा भावनात्मक सहयोग की आवश्यकता है। इससे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया अधिक बालक–केंद्रित, समावेशी एवं प्रभावी बन सकेगी। यह अध्ययन अभिभावकों के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। अध्ययन के निष्कर्ष माता–पिता को यह समझने में सहायता करेंगे कि केवल परिवार का प्रकार ही नहीं, बल्कि परिवार का वातावरण, संवाद, स्नेह, सहयोग, अनुशासन तथा बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उनके मानसिक विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं। यदि संयुक्त परिवार में संघर्ष, उपेक्षा अथवा असमान व्यवहार है तो उसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, वहीं यदि एकल परिवार में प्रेमपूर्ण वातावरण, पर्याप्त समय, खुला संवाद और सकारात्मक पालन–पोषण उपलब्ध है तो किशोर का मानसिक विकास अत्यंत संतुलित हो सकता है। इस प्रकार अध्ययन परिवार की गुणवत्ता को परिवार की संरचना से अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध करने में भी सहायक हो सकता है। यह अध्ययन नीति–निर्माताओं एवं शिक्षा प्रशासकों के लिए भी उपयोगी होगा। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समग्र विकास, मानसिक स्वास्थ्य, जीवन–कौशल तथा सामाजिक–भावनात्मक अधिगम पर विशेष बल देती है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यालयों में किशोर मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, अभिभावक जागरूकता कार्यक्रम, परिवार–विद्यालय सहभागिता तथा परामर्श सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। साथ ही बाल एवं किशोर कल्याण से संबंधित योजनाओं एवं कार्यक्रमों के निर्माण में भी यह अध्ययन उपयोगी आधार प्रदान करेगा। अंततः कहा जा सकता है कि संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन केवल दो पारिवारिक संरचनाओं की तुलना भर नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक सामाजिक प्रक्रिया को समझने का प्रयास है जिसके माध्यम से परिवार किशोरों के व्यक्तित्व एवं मानसिक विकास का निर्माण करता है। वर्तमान समय में जब परिवार की संरचना तेजी से बदल रही है और किशोर अनेक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, तब यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि किस प्रकार का पारिवारिक वातावरण उनके मानसिक विकास के लिए अधिक अनुकूल सिद्ध होता है तथा किन परिस्थितियों में परिवार उनकी बौद्धिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यवहारिक क्षमताओं के विकास में प्रभावी भूमिका निभाता है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष न केवल शिक्षकों, अभिभावकों, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षा प्रशासकों एवं नीति–निर्माताओं के लिए उपयोगी होंगे, बल्कि किशोरों के समग्र एवं संतुलित मानसिक विकास के लिए एक वैज्ञानिक, व्यावहारिक एवं सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण दिशा भी प्रदान करेंगे।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

प्रणव तिवारी एवं शुभम के. सूर्यवंशी (2015) ने संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों की भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध किया। अध्ययन में 60 किशोरों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि संयुक्त परिवार में रहने वाले किशोरों की भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति एकल परिवार के किशोरों की अपेक्षा अधिक होती है। इसके फलस्वरूप उनमें आत्मविश्वास, मानसिक संतुलन तथा मानसिक विकास का स्तर अधिक पाया गया।

तमकीन सलीम एवं सीमा गुल (2016) ने परिवार की कार्यप्रणाली एवं किशोरों की सामाजिक दक्षता : परिवार की संरचना के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध किया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि संयुक्त परिवार के किशोरों में सामाजिक दक्षता, समायोजन क्षमता तथा मानसिक स्वास्थ्य का स्तर एकल परिवार के किशोरों की अपेक्षा अधिक था। वहीं पारिवारिक अव्यवस्था का किशोरों के मानसिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पाया गया।

मकबूल अहंगर एवं महमूद अहमद खान (2017) ने संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर 600 किशोरों का अध्ययन किया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि संयुक्त परिवार के किशोर आत्म–जागरूकता, आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति, सामाजिक संबंध तथा मानसिक संतुलन के क्षेत्र में एकल परिवार के किशोरों से अधिक सक्षम पाए गए।

वी. एस. कोचुकृष्ण कुरुप, गीता वी. सी. एवं प्रशांत पी. (2018) ने परिवार की संरचना एवं किशोरों के मनोसामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध किया। अध्ययन में पाया गया कि संयुक्त परिवार के किशोरों का मनोसामाजिक समायोजन बेहतर था। उन्हें परिवार के सदस्यों से अधिक भावनात्मक सहयोग, सुरक्षा तथा मार्गदर्शन प्राप्त होता था, जिससे उनका मानसिक विकास सकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ।

निधि माथुर (2020) ने संयुक्त एवं एकल परिवारों के उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के समायोजन, आक्रामकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन विषय पर शोध किया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता अधिक तथा आक्रामकता का स्तर कम था, जिससे उनका मानसिक एवं शैक्षिक विकास अधिक संतुलित पाया गया।

केट पार्कर एवं सहयोगियों (2022) ने किशोरों में पारिवारिक संयुक्त गतिविधियों एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य संबंध का अध्ययन विषय पर चार देशों के किशोरों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि जिन किशोरों की परिवार के साथ नियमित सहभागिता एवं सकारात्मक पारिवारिक गतिविधियाँ अधिक थीं, उनमें मानसिक स्वास्थ्य, जीवन–संतोष तथा मनोवैज्ञानिक कल्याण का स्तर अधिक था।

आयुषी अग्रवाल एवं अंशुही बहादुर (2023) ने किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर परिवार की संरचना की भूमिका रू एक तुलनात्मक अध्ययन विषय पर 400 किशोरों का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों से

ज्ञात हुआ कि संयुक्त परिवार के किशोरों का मानसिक स्वास्थ्य एकल परिवार के किशोरों की अपेक्षा अधिक अच्छा था। साथ ही, बालिकाओं का मानसिक स्वास्थ्य बालकों की अपेक्षा बेहतर पाया गया।

अंकिता शर्मा एवं जयश्री शुक्ला (2023) ने संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों के सामाजिक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध किया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि संयुक्त परिवारों के किशोरों में सामाजिक कौशल, सहयोगात्मक व्यवहार, समायोजन क्षमता तथा पारस्परिक संबंधों की गुणवत्ता एकल परिवार के किशोरों की अपेक्षा अधिक विकसित थी। इन गुणों ने उनके मानसिक विकास को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित किया।

समस्या कथन

संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास में सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद जनपद के संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद जनपद के संयुक्त एवं एकल परिवारों का 250 किशोरावस्था से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

उपकरण

- मानसिक विकास मापनी :– स्वनिर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

तालिका संख्या – 1

संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिवार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
संयुक्त	140	156.42	18.56	3.12	सार्थक
एकल	110	148.37	20.18		

व्याख्या :– उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवार के 140 किशोरों के मानसिक विकास का मध्यमान 156.42 तथा मानक विचलन 18.56 है जबकि एकल परिवार के 110 किशोरों के मानसिक विकास का मध्यमान 148.37 तथा मानक विचलन 20.18 है। दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया, जिसका मान 3.12 प्राप्त हुआ। यह मान 0.05 स्तर पर आवश्यक सारणी मान (लगभग 1.96) तथा 0.01 स्तर पर आवश्यक सारणी मान (लगभग 2.58) से अधिक है। अतः संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों के मानसिक विकास में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। संयुक्त परिवार के किशोरों का मानसिक विकास एकल परिवार के किशोरों की अपेक्षा अधिक पाया गया इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पारिवारिक संरचना किशोरों के मानसिक विकास को प्रभावित करती है तथा संयुक्त परिवार का वातावरण मानसिक विकास के लिए अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल सिद्ध होता है।

निष्कर्ष

1. संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, ए., एवं बहादुर, ए. (2023). किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक संरचना की भूमिका : एक तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 11(2), 1571–1578.
- अहंगर, एम., एवं खान, एम. ए. (2017). संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्तारू एक तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज।
- कुरुप, वी. एस. के., गीता, वी. सी., एवं प्रशांत, पी. (2018). मनोसामाजिक समायोजन एवं परिवार की संरचनारू संयुक्त एवं एकल परिवारों का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च जर्नल।
- माथुर, निधि. (2020). उच्च माध्यमिक स्तर के संयुक्त एवं एकल परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन, आक्रामकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 8(2)।
- पार्कर, के., एवं अन्य. (2022). चार देशों के किशोरों में संयुक्त पारिवारिक गतिविधियों के प्रकार तथा मानसिक स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण से उनका सम्बन्ध, जर्नल ऑफ एडोलसेंट हेल्थ।
- सलीम, टी., एवं गुल, एस. (2016). किशोरों में पारिवारिक अव्यवस्था एवं सामाजिक दक्षता : पारिवारिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन, पाकिस्तान जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल रिसर्च।
- शर्मा, अंकिता, एवं शुक्ला, जयश्री. (2023). बिलासपुर जिले के संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों के सामाजिक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन, रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी।

- तेवारी, प्राणव, एवं सूर्यवंशी, शुभम के. (2015). संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों में भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति : एक तुलनात्मक अध्ययन, ऑनलाइन जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 1(1), 18–22 |

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-1, April-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-April-2023/43

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 शोभा गिल[1], स्वाति शर्मा[2]

for publication of research paper title

संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के मानसिक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-01, Month April, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com